ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मार्च 2023

स्वप्निल आभा लिए एक अनोखा स्कूल

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मार्च 2023
वर्ष : 3, अंक : 20

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

डॉ. रमेश यादव	: दादा-दादी पार्क	6
अनिल जायसवाल	: पुरस्कार या दंड	9
तारा दत्त जोशी	: मेहनत का फल	11
प्रकाश तातेड़	: रेनबो टापू की पिकनिक	14

कविताएं

डॉ. राकेश चक्र	: वंदेमातरम गाओ	5
डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	: नीम का पेड़	8

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल विशेष

विशेष

कमलेश अटवाल : रंगों को कोई और रंग ना दो तुम 17

सैर

विश्व पुस्तक मेला के बहाने दिल्ली भ्रमण 22-23

अनुभव

बबीता जोशी : शहर एक अनुभव का नाम है 34

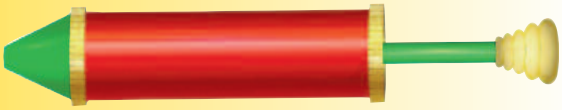

कहानियां

बबीता जोशी	: बंदर संग होली	18
अंकित भट्ट	: दोस्तों की होली	19
सुमित शर्मा	: घर का रंग	19
करन चन्द	: एक होली ऐसी भी	20

कविताएं

आरोही अटवाल	: रंग-बिरंगे दिन आए	21
चेतन चंद	: खुशियों के दिन	21
अंशदीप कौर	: होली की बात	21
आईशा कौर	: खुशियों का त्योहार	24
भावना कठायत	: खुशियों की बौछार	24
करण थापा	: रंग देखे खूब सारे	24
जिया कठायत	: होली की यादें	25
नताशा चंद	: होली में पकवान	25
नवजोत कौर	: रंगों की बरसात	25
प्रिंस जोशी	: त्योहार आया है	26
राहुल पोखरिया	: इतने रंग उड़ाएंगे	26
रेखा जोशी	: गुलाल गया कहां	27
रिया ऐरी	: रंग-बिरंगी दुनिया	27
साक्षी कांडपाल	: खुशियों की बहार	27

चित्र

उज्ज्वल कठायत, अंशु प्रजापति, नंदेश प्रजापति,
अंश गुरो, मनमिंदर कौर 28-29

विचार

हर्षित राणा	: थारू समुदाय में होली	30
खुशी अटवाल	: क्यों मनाते हैं होली!	30
पीयूष राना	: होली के कई रंग!	31
अक्षत कांडपाल	: मिलन का त्योहार	31
जतिन सिंह पल्याल	: सब बांध लो अपनी झोली, क्योंकि आने वाली है होली	32
निशा राणा	: होली मनाने के अलग-अलग तरीके	32
पवनदीप सिंह	: रंगों से भरा वो दिन	33
योगेश जोशी	: होली की तैयारी	33

पायस

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

मार्च 2023, वर्ष : 3, अंक : 20

संपादक
अनिल जायसवाल
वरिष्ठ उप संपादक
श्यामपलट पांडेय
कविता सलाहकार
सन्तोष कुमार सिंह
डिजाइन सलाहकार
भुपेन मंडल
(सभी पद अवैतनिक व मानद हैं)

Email
payasmagazine@gmail.com
Facebook
www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp
7982014609
Youtube
payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog
https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।

◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार करने की बाध्यता नहीं है।

संपादकीय पता

PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh,
New Delhi-110026

परिणाम नहीं, प्रयास जरूरी है

कई महीनों की अनुपस्थिति के बाद पायस फिर से आपके सम्मुख प्रस्तुत है। किसी भी कार्य को करने के लिए धन की बहुत आवश्यकता होती है। पायस मेरे लिए एक जुनून जैसा है परंतु साथ में मेरी एक मजबूरी भी है कि मैं इसमें अधिक धन नहीं लगा सकता। अब तक आप साथियों ने बहुत साथ दिया, जिससे पायस बिना किसी रुकावट के आपके सम्मुख प्रस्तुत होती रही। लेकिन सब दिन एक समान नहीं होते हैं। आजकल होते-होते कई महीने निकल गए, पर पायस आप तक नहीं पहुंचा पाया। लेकिन अब चाहे कुछ भी हो, नियमित रूप से पायस को आपके सम्मुख प्रस्तुत करता रहूंगा।

इस अंक से पायस के स्वरूप में कुछ बदलाव लाया हूं। अब कोशिश यह रहेगी कि अगर स्कूल और छात्रों का सहयोग रहा, तो हर 1 या 2 महीने में किसी एक स्कूल के छात्रों को पायस में भरपूर स्पेस दिया जाएगा।

इसकी शुरुआत उत्तराखंड के नानकमत्ता के नानकमत्ता पब्लिक स्कूल से की गई है। इस स्कूल के प्रमुख शिक्षक कमलेश अटवाल जी के सहयोग से यह कार्य संपन्न हो पाया। उन्होंने कुछ छात्राओं को हमसे जोड़ा जिन्होंने अन्य बच्चों से रचनाएं ली और हम तक पहुंचाया।

इन बच्चों में बबीता जोशी का नाम मैं प्रमुख रूप से लेना चाहूंगा, जिन्होंने शुरू से अंत तक पूरी तन्मयता से पायस को सहयोग दिया। हमारे कहने पर उन्होंने कुछ सामग्री को टाइप करके भी भेजा। समय पर रचनाएं हम तक पहुंचाईं और हमारी बात को बड़े धैर्य से सुना। वह बहुत अच्छी लेखिका भी हैं और मुझे उम्मीद है कि समय के साथ उनका लेखन और आगे बढ़ेगा और आने वाले समय में हम उन्हें एक प्रमुख लेखिका के रूप में जानेंगे।

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल के बच्चों की रचनाओं को पढ़कर कह सकता हूं कि हिंदी लेखन का भविष्य उज्ज्वल है। यह स्कूल आपने बच्चों को एकेडमिक शिक्षा देने के साथ, समाज के लिए उत्तरदायित्व समझने वाले बच्चों को तैयार कर रहा है। उन्हें देश और समाज को समझने का पूरा अवसर उपलब्ध करा रहा है। इसके लिए इस स्कूल के मैनेजमेंट को नमन।

पायस आपके सम्मुख है। आप इसे पढ़ें और अपनी राय हम तक जरूर पहुंचाएं।

अनिल जायसवाल

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें। पढ़ने की चाह रखने वाले बच्चों तक इस पत्रिका को निशुल्क पहुंचाने में दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दें

धन्यवाद

जिनकी वार्षिक सदस्यता के 12 महीने हो गए हैं, उनसे अनुरोध है कि फिर से मदद करें

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : ₹ 20, एक वर्ष : ₹ 240

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

एक अपील

वार्षिक सदस्य बनकर पत्रिका को आगे बढ़ाने में मदद करें

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

Anil Kumar Jaiswal

PAYTM : 9810556533

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL KUMAR JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email :

payasmagazine@gmail.com

वंदेमातरम गाओ

आजादी की नूतन बेला
वंदेमातरम गाओ।
घर घर फहरे आज तिरंगा
पावन पर्व मनाओ।।

बलिदानों की गौरव गाथा
भारतवासी भूल न जाना।
प्राण लुटाए हँसते - हँसते
अंग्रेजों को सबक सिखाना।

ऐक्य भाव से बढ़े समृद्धि
मातृभूमि बलि जाओ।
आजादी की नूतन बेला
वंदेमातरम गाओ।।

जो भी अच्छा कर सकते हम
सदा देश हित जीवन जीएं।
याद भी करना भगत आदि को
सत्य , प्रेम का रस पीएं।

भोगवाद में डूब न जाना
निज कर्तव्य निभाओ।
आजादी की नूतन बेला
वंदेमातरम गाओ।।

जातिवाद और क्षेत्रवाद को
तूल नहीं देना है अच्छा।
भाषा तो सब ही हैं प्यारी
संस्कृति से सबकी रक्षा।।
देश बढ़ेगा हिंदी से ही
राष्ट्रभाषा बनाओ।
आजादी की नूतन बेला
वंदेमातरम गाओ।।

राजनीति से उठकर देखो
हिंसा , दंगा मत फैलाओ।
मानवता के लिए जीएं सब
निज कर्तव्य निभाओ।।

मानव हैं तो अच्छा सोचें
वेद ज्ञान अपनाओ।
या
सबको मित्र बनाओ
आजादी की नूतन बेला
वंदेमातरम गाओ।।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. राकेश चक्र : भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत। नौ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित। छह दर्जन बाल साहित्य में गद्य और पद्य की मौलिक पुस्तकें।

दादा-दादी पार्क

डॉ. रमेश यादव

तनिष्का को प्यार से लोग तनु के नाम से पुकारते हैं। वह कक्षा आठ में पढ़ती है। उसका बड़ा भाई है आकाश, जो बारहवीं में पढ़ता है। खूब लड़ते-झगड़ते हैं दोनों, पर एक दूसरे से प्यार भी उतना ही करते हैं। उनकी मम्मी बैंक में नौकरी करती हैं, तो पापा इंजीनियर हैं। दिन भर घर की जिम्मेदारी उन दोनों पर ही होती है

गांव से दादा-दादी आ रहे हैं, इस खबर से तनु कुछ परेशान हो रही थी। उसने अपने दादा-दादी को कभी देखा नहीं था। इसलिए उसके मन में कुछ प्रश्न उठ रहे थे, जैसे कि मेरे दादा-दादी कैसे होंगे ? कैसे दिखते होंगे ? मन ही मन वह सोचे जा रही थी। पिछली बार जब दादा-दादी मुंबई आये थे तब तनु सिर्फ तीन साल की थी। अब वह अपने मन में दादा-दादी के स्वभाव की भला क्या तस्वीर बनाए! तनु ने बड़े भाई आकाश से पूछा, "भैया हमारे दादा-दादी क्या बड़े सख्त हैं ? "

"हां तनु, दादाजी बड़े गुस्सैल स्वभाव के हैं, अब तुम सुधर जाओ, वरना दादाजी कान पकड़कर तुमको गांव ले जाएंगे और खेती के काम में लगा देंगे।"

तनु की जिज्ञासा का समाधान नहीं हुआ। रात को सोने से पहले उसने मम्मी से भी पूछा, पर मम्मी ने जवाब दिया, " कल वे लोग आएंगे तो तुम खुद ही देख लेना, अब सो जाओ चुपचाप।" पापा देर से आने वाले थे। सुबह तनु को स्कूल जाना था, अतः वह तुरंत सो गई।

आखिर वह दिन आ ही गया, जब दादा-दादी घर पधार चुके थे। तनु स्कूल से आई तो दादी ने पास बुलाकर उसे चूम लिया। दादाजी ने उसे गले से लगा लिया, "देखो, कितनी बड़ी और सयानी हो गई है हमारी बिटिया रानी।"

तनु ने तुरंत दादा- दादी के पांव छूए। दादाजी ने उसे दुलराया और कहा, " बेटे कुछ महीनों तक हम यहीं आपके साथ रहेंगे, ठीक है ना ! आप हमें यहां घुमाओगे ना ? "

तनु ने हाथ मिलाया और कहा, "ठीक है, हम आप लोगों को यहां खूब घुमाएंगे, किसी बात की चिंता मत करना।" इस बात पर सभी ने जोर का ठहाका लगाया।

दादा-दादी से मिलकर तनु बहुत खुश थी। कल तक तो उनके बारे में वह न जाने क्या-क्या कयास लगाए जा रही थी ! मगर तनु के दादाजी तो लंबे-चौड़े कद के सेवानिवृत्त प्राध्यापक निकले। उन्हें चित्रकारी का

बड़ा शौक था। दादी भी एकदम प्यारी थीं। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि आते ही वे उसके दोस्त बन गए थे, इससे उसके मन का सारा भ्रम दूर हो गया था।

दूसरे दिन से ही स्कूल, कॉलेज, क्लास, होमवर्क, ऑफिस का सिलसिला शुरू हो गया था। सब लोग अपने-अपने काम में लग गए।

मगर दादी के आ जाने से तनु की मम्मी को काफी राहत मिल गई थी। दादी सुबह किचन के काम में मदद कर देती थीं, और दोपहर को गरमा-गरम खाना भी अपने हाथों से बनाती थीं। तनु और आकाश को तो इतना अच्छा लग रहा था कि पूछो मत। घर एकदम से खिल उठा था। तनु के मम्मी-पापा की चिंता और तनाव भी कम हो गया था। रात में सभी मिलकर एक साथ खाना खाते थे। तनु और उसके भैया के झगड़े भी कम हो गए थे।

एक दिन शाम को तनु अपने दादाजी और दादी के साथ इतराती हुई पार्क में टहलने गई। वह अपने दोस्तों से उन्हें मिलवाना चाहती थी। अचानक सामने से आ रहे एक व्यक्ति ने पान की जोरदार पिचकारी पार्क की पक्की जमीन पर लगाई। दादाजी ने तुरंत उसे टोक दिया, "भाई, समझदार होते हुए भी सार्वजनिक जगह पर थूकते हो! इससे गंदगी फैलती है।"

इस पर वह व्यक्ति गुर्राया और जोर से बोला, "ये आपकी जगह है क्या?"

"नहीं भाई, यह हम सबकी जगह है। यहां लोग अपने बच्चों के साथ घूमने-टहलने आते हैं। आपका भी परिवार आता होगा! स्कूल के बच्चे यहां खेलते हैं। गंदगी से रोग फैलता है। पार्क की स्वच्छता और सफाई हम सबकी जिम्मेदारी है।"

दादाजी ने उस व्यक्ति से थूकी हुई जगह को साफ करने को कहा, पर वह नहीं माना। जोर-जोर बहस करने लगा। लोग तमाशा देखने जमा हो गए। कोई कुछ बोल नहीं रहा है, यह देख, दादाजी ने पास गिरे एक अखबार के टुकड़े को उठाया और खुद ज़मीन साफ करने लगे।

यह देखकर लोग चकित हो गए। वह व्यक्ति भी शर्मिंदा हो गया। प्रायश्चित के तौर पर अब वह भी इधर-उधर गिरे कचरे और कागज के टुकड़ों को उठाकर कूड़ेदान में डालने लगा। दादाजी ने इस काम में उसका साथ दिया। पास खड़े लोग भी बिना एक-दूसरे से कुछ बोले सफाई के काम में लग गए।

देखते ही देखते पार्क साफ हो गया और लोगों की आंखें खुल गईं। एक बुजुर्ग व्यक्ति आगे बढ़कर बोला, "स्वच्छता के महत्त्व को तो हम सभी जानते हैं पर ठीक से कभी पहल नहीं हो पाई। आपने अगुवाई की और यह समझ लोगों में आ गई।"

दादाजी ने कहा, "आखिर यह पार्क हमारी ही कॉलोनी का एक हिस्सा है, तो क्यों ना हम सब मिलकर इन दीवारों की रंगाई-पुताई करके पार्क को और भी सुंदर बनाए? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम सब मिलकर इस नेक काम को बेहतर अंजाम दें।"

सबने एक सुर में हामी भरी। सामान लाने की सारी जिम्मेदारियां सबने आपस में बांट ली। पैसों का भी इंतजाम हो गया।

तय दिन पर दादा-दादी, तनु, उसका भैया, उनके मित्र, सहेलियां, तनु के मम्मी-पापा पार्क पहुंच गए। मगर पार्क में कुछ गिने-चुने लोग ही आए थे। दादाजी निराश नहीं हुए, जितने लोग थे, उन्हें लेकर सफेदी करने का काम आरंभ कर दिया। बड़े-बड़े चित्र बनाकर दादाजी ने बच्चों को उसमें रंग भरने का काम दे दिया। दादाजी की चित्रकारी देखकर बच्चे एकदम खुश हो गए। चित्रों में कार्टून के पात्र स्वच्छता और सुंदरता का संदेश दे रहे थे। बच्चे तुरंत अपने पसंद के काम में लग गए। हवा की तरह यह खबर कॉलनी में फैल गई। धीरे- धीरे कारवां बढ़ता गया । महिलाओं ने घर से चाय नास्ते का इंतजाम किया। लगातार तीन दिनों तक यह काम चलता रहा।

लोगों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। दादाजी की पूर्व सूचना के अनुसार पूरी कॉलोनी और पार्क में वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ। बच्चों ने इस काम में भी खूब आनंद लिया। अब तक उन लोगों ने इस बात को सिर्फ अखबारों और किताबों में पढ़ी थी, मगर यहां तो वे अपने हाथों से पौधे लगाकर उसे सींच रहे थे।

पार्क अब सजकर तैयार हो गया था। आखिर में पार्क में दादाजी का सम्मान किया गया और पार्क का नामकरण हुआ, "दादा-दादी पार्क।"

सम्मान के जवाब में दादाजी ने कहा, "आप सभी ने स्वच्छता के इस मिशन को अपना मानते हुए दायित्त्व को निभाया उसे मैं नमन करता हूं।"

छुट्टियां बीतीं। अब उनकी गांव जाने की तैयारी होने लगी। इस खबर से तनु और आकाश के तो होश उड़ गए थे। कॉलोनी के लोग भी उन्हें रोकने की पूरी कोशिश कर रहे थे।

दादाजी ने सबको समझाया, "गांव में खेतों की लहलहाती फसलें, बाग-बगीचे, पेड़-पौधे, घर के पालतू जानवर हमारा इंतजार कर रहे होंगे। अगर हम समय से नहीं जाएंगे तो हमारा घर, खेत, खलिहान हमसे नाराज हो जाएंगे। हमारे पेड़-पौधे हमसे रूठ जाएंगे।"

दादा-दादी को विदा करते हुए लोग सिसकियां भर रहे थे। सीटी बजी और लहराती हुई गाड़ी चल पड़ी।

नीम का पेड़

ताऊजी से गुस्सा हैं हम,
बोलो, क्यों कटवाया पेड़ ?

दरवाजे पर पेड़ नीम का,
लगा हुआ था प्यारा सा।
लगता था दरबान सरीखा,
खूब बड़ा-सा, न्यारा-सा।
चौबारे से हरा-भरा वह
बोलो, क्यों हटवाया पेड़ ?

लिपट-चिपट उसकी शाखों में,
खिल उठता था सबका मन।
रस्सी डाल झूलते थे हम,
जब-जब आता था सावन।
रिमझिम बारिश में लगता था,
मल-मल खूब नहाया पेड़।

उसकी सींकों से छोटी सी,
झाड़ू खूब बनाते थे।
निमकौरी हम मीठी-मीठी,
बीन-बीनकर खाते थे।
एसी-कूलर क्या देंगे जी,
देता जैसी छाया पेड़।

नयी पत्तियाँ पीस-पीस कर,
दादी हमें पिलाती थीं।
फोड़े-फुंसी कभी न होंगे,
यह हमको समझातीं थीं।
कहती थीं यह वैद्यराज है,
स्वस्थ रखेगा काया, पेड़।

ताऊजी से गुस्सा हैं हम,
बोलो, क्यों कटवाया पेड़ ?

अपने लेखक को जानिए

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' : नागेश प्राध्यापक हैं, परंतु उनकी पहचान एक साहित्यकार और आलोचक के रूप में ज्यादा है। इनकी कविताएं और कहानियां चर्चित हैं। कई पुस्तकें प्रकाशित।

पुरस्कार या दंड

अनिल जायसवाल

एक जंगल के किनारे एक छोटा-सा गांव था। उस गांव में एक वैद्यजी रहते थे। नाम था रामदेव। लोगों को उनपर बहुत विश्वास था। वह मरीज को देखते ही बीमारी को पकड़ लेते थे। वैद्यजी बीमारी के इलाज के लिए जड़ी-बूटियों का प्रयोग करते थे। जड़ी-बूटी लेने के लिए वह हर हफ्ते जंगल का एक चक्कर लगाया करते थे।

वैद्य रामदेव के दो बेटे थे, हरी और वीर। दोनों अभी किशोर थे। मरीजों के इलाज के दौरान रामदेव दोनों बच्चों को साथ रखते और उन्हें बीमारी और दवा के बारे में बताते रहते थे। इस तरह वह अपनी विद्या बच्चों को भी सिखा रहे थे।

एक बार वैद्यजी बीमार पड़ गए। अब ठहरे वैद्य, खुद अपना इलाज करने लगे। कुछ दिनों के बाद बीमारी तो उनकी पकड़ में आ गई, पर उसके इलाज के लिए उनके पास जड़ी-बूटियां कम पड़ने लगीं। बीमार होने के कारण उनके लिए जंगल जाना संभव नहीं था।

रामदेव बहुत चिंतित हुए। अंत में उन्होंने बेटों को बुलाया और बोले, “बच्चों, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। इलाज के लिए जड़ी-बूटियों की आवश्यकता है। इसलिए आज तुम दोनों जंगल से जड़ी बूटियां ले आओ। फिर मैं बूटियों की पहचान कर दवा बना लूंगा।” उन्होंने अपने बच्चों को बूटियों की पहचान बता दी।

दोनों बेटे खुशी-खुशी जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने मन ही मन सोचा, “हम खूब सारी जड़ी-बूटियां लाएंगे।”

जंगल पहुंचकर दोनों जड़ी-बूटियां ढूंढ़ने लगे। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे दोनों जंगल के काफी भीतर पहुंच गए। पिता की बताई जड़ी-बूटियां चुनते-चुनते शाम हो गई।

तभी बारिश होने लगी। दोनों भाई छिपने की जगह ढूंढ़ने लगे। हरि को थोड़ी दूरी पर एक गुफा दिखाई दी, तो वह वीर से बोला, “भाई, चलो, उस गुफा में शरण लेते हैं।” दोनों ने गुफा में पहुंचकर शरण ली।

हरी और वीर के गुफा में घुसते ही गुफा का दरवाजा जादुई अंदाज में बंद हो गया। दोनों भाई घबरा गए। तभी वीर की नजर गुफा के दूसरे सिरे की ओर गई। वह फुसफुसाया, “भाई, देखो, उस तरफ से रोशनी आ रही है। चलो चलकर देखते हैं।”

दोनों भाई गुफा की दूसरी ओर चलते गए और थोड़ी देर बाद दूसरे मुंह से होकर गुफा से बाहर निकल आए।

वहां दोनों की आंखें फटी की फटी रह गईं क्योंकि बाहर एक बड़ा ही भव्य महल दिखाई दे रहा था। वे चकित होकर महल को निहार ही रहे थे कि कुछ परियों ने आकर उन्हें घेर लिया और पूछा, “तुम लोग यहां कैसे आ गए ? यहां बिना आज्ञा आने के अपराध में तुम्हें दंड मिलेगा।”

उनमें से एक परी उनकी मुखिया लग रही थी। उसने अन्य परियों को आदेश दिया, “इन दोनों को पकड़कर कारागार में डाल दो।” बाकी परियों ने उसकी आदेश का पालन करते हुए दोनों भाइयों को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया। उनमें से मुखिया परी बोली, “अभी हमारी परी रानी बीमार हैं। उनके ठीक होते ही तुम्हें उनके सामने पेश किया जाएगा। तब तुम्हें परीलोक आने पर दंड मिलेगा। तब तक तुम दोनों कैद में रहोगे।”

सुनकर दोनों भाई घबरा गए। फिर दोनों भाइयों ने कुछ देर सोचा, और उनमें से वीर बोला, “हम दोनों वैद्य के बेटे हैं और इलाज करना जानते हैं। हमें परी रानी को देखने का मौका दीजिए। शायद हम उन्हें स्वस्थ कर सकें।”

परी प्रमुख उसकी बात सुनकर सोच में पड़ गई। कुछ सोचकर वह दोनों भाइयों को परीरानी के पास ले जाने को तैयार हो गई। दोनों भाइयों को परीरानी के पास ले जाया गया। हरि ने नब्ज देखकर उनसे आग्रह किया, “परी रानी, हमारी दी दवा खाकर देखें। जल्द ही आपको आराम मिलेगा। अगर ऐसा न हुआ, तो आप जो चाहें, सजा हमें दे सकती हैं।”

परी रानी गम्भीर होकर बोली, “सजा तो तुम्हें मिलेगी ही, क्योंकि तुम दोनों ने अनजाने में ही सही, पर हमारे परीलोक में कदम तो रख ही दिया है। हां, अगर मुझे ठीक कर सके तो इनाम में ऐसा कुछ दूंगी, जो दंड के दुख को कम करने में तुम्हारी मदद करेगा।”

दोनों भाइयों को लेकर कुछ परियां वापस जंगल में आईं। घनघोर अंधेरे में किसी तरह उन्होंने जड़ी-बूटियां

ढूंढ़ीं। फिर संतुष्ट होकर महल लौटे। उन्होंने जड़ी बूटियों से एक दवा बनाई और परी रानी को दिया। दवा खाकर परीरानी कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो गईं।

इतने दिनों तक दोनों भाइयों की वहां खूब खातिरदारी की गई। इतना कुछ खाने-पहनने को दिया कि दोनों भाई भूल ही गए कि उनके पिता बीमार थे, और उन्होंने अपने ईलाज के लिए जड़ी-बूटियां लाने उन्हें जंगल में भेजा है।

परीरानी ठीक हो गईं तो उनका दरबार लगा। हरी और वीर को आदर सहित दरबार में लाया गया। परीरानी ने खुश होकर मोतियों से भरी एक थैली दोनों भाइयों को भेंट में दी और कहा, "इसे तुम यहां आने का दंड और इलाज का इनाम समझो।"

परीरानी की बात दोनों भाइयों की समझ में नहीं आई। पर उनकी हिम्मत नहीं हुई कि वे परी रानी से पूछ सकें कि भला एक ही चीज को दंड और पुरस्कार कैसे समझा जा सकता है। फिर परी रानी ने आदेश दिया, "दोनों भाइयों को गुफा से बाहर छोड़कर आओ।"

परियों ने दोनों भाइयों को गुफा के बाहर छोड़ दिया। दोनों जैसे ही गुफा से बाहर आए, गुफा अदृश्य हो गया।

अब दोनों ने घर जाने की ठानी। पर दोनों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं लगा। गुफा के बाहर का वातावरण बहुत बदल गया था। वह उस जंगल को भी पहचान नहीं पाए। उन्हें लगा, उन्हें किसी दूसरे जंगल में छोड़ दिया

गया है।

बड़ी मुश्किल से दोनों जंगल से बाहर निकले। बाहर का नजारा भी अलग था। रास्ता जाना-पहचाना सा लगा पर बिल्कुल उससे अलग था, जिससे होकर वे जंगल में दाखिल हुए थे। किसी तरह दोनों आगे बढ़े। गांव के अंदर आते-आते उनका विस्मय बढ़ता गया। उनका गांव भी बिल्कुल बदल चुका था। बड़ी मुश्किल में ढूंढ़ते हुए वे दोनों अपने घर पहुंचे।

घर की हालत देखकर उन्हें रोना आ गया। उनका घर टूटी-फूटी हालत में था। उन्होंने आवाज लगाई तो तो दो बूढ़े बाहर आए। बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपने माता-पिता को पहचाना, जो बहुत बूढ़े हो गए थे।

दोनों बच्चों को देखकर उनके माता-पिता खुशी से रो पड़े। राते-रोते मां ने पूछा, "अरे, तुम दोनों कहां चले गए थे? एक बार भी हम दोनों की याद न आई। पता है, तुम्हारी याद में हमने कैसे दिन गुजारे। लोग कहते थे, तुम दोनों किसी जंगली जानवर का शिकार बन गए। पर मेरा मन नहीं मानता था। पता है, पूरे 12 वर्ष बाद तुम दोनों घर लौटे हो।"

सुनकर दोनों भाई सन्न रह गए। अब परी रानी की बात उनकी समझ में आई। गुफा के अंदर आने की सजा के रूप में उनकी जिंदगी के बारह वर्ष चले गए थे और इलाज के नाम में उन्हें मोतियों की माला मिली थी।

पर अब वे दोनों क्या कर सकते थे? परी से मिले मोती इतने कीमती थे कि उन्हें बेचकर उन्होंने बढ़िया मकान बनाया। सब सुविधाएं जुटाईं। वे दोनों अपने माता-पिता की खूब अच्छे से देखभाल कर जिंदगी बिताने लगे। ❁

मेहनत का फल

एक बार मनुष्य की करतूतों से नाराज होकर वर्षा सूरज को संदेश भेजकर बोली, "देखो भैया, मैं धरती पर बरसकर तरह-तरह के पेड़-पौधे उगाकर धरती को हरा-भरा और सुंदर बनाती हूं। लेकिन मनुष्य दिन-रात अपने फायदे के लिए पेड़-पौधों को काटकर मेरी मेहनत पर पानी फेर रहा है। और तो और, धरती में सीमेंट बिछाकर मुझे धरती के अंदर भी नहीं जाने दे रहा है। जब किसी को मेरी मेहनत की परवाह ही नही है तो मैं भी अब धरती पर नहीं जाऊंगी। यह बार-बार समुद्र से आसमान, आसमान से धरती का चक्कर मैं क्यों काटूं भला?"

सूरज ने वर्षा को समझाना चाहा, लेकिन वह गुस्से से लाल-पीली होकर धरती में लोटते हुए सागर के अंदर जाकर सो गई।

वर्षा के नाराज होने से पानी बरसना बंद हो गया। स्वार्थी मानव ने अपने पीने का जुगाड़ तो कर लिया,लेकिन बेचारे पशु-पक्षी ˙प्यास के मारे तड़पने लगे। छोटे-छोटे फूल-पौधे, घास, लताएं बिना पानी के मुरझाकर धीरे-धीरे दम तोड़ने लगे। जीव-जंतु प्यास के मारे जंगल से भटकते-भटकते मानव बस्तियों में पहुंचते, तो मानव उनका वध कर देता। बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई।

अपनी प्रजा को परेशान देखकर जंगल के राजा शेर ने एक आपात बैठक बुलाई। राजा के आदेश पर सारी प्रजा एकत्र हो गई। राजा ने अपने मंत्री लोमड़ी को आदेश दिया, "जाकर पता लगाओ, आखिर वर्षा क्यों नहीं हो रही है?"

लोमड़ी को पहले ही पता था। वह बोली, "महाराज! मानव द्वारा जंगल काट देने से वर्षा नाराज हो गई है। वह सूरज से कहकर गई है कि अब वह धरती पर नहीं जाएगी क्योंकि यह मनुष्य उसके द्वारा सींची गई धरती के पेड़-पौधों को काटकर उसकी मेहनत पर पानी फेर रहा है।"

अपने लेखक को जानिए

तारा दत्त जोशी : रा .इ .का हरिपुरा हरसान में शिक्षक। बाल विज्ञान कहानी, बाल विज्ञान कविता, व विज्ञान लेख। देवपुत्र, बालप्रहरी, प्रेरणा में बाल कहानी व कविताएं प्रकाशित। विज्ञान पत्रिकाओं में विज्ञान लेख विज्ञान कविताएं प्रकाशित ।

शेर गुर्राया, "अच्छा! ऐसी बात है, तब तो हम सबको मिलकर इस मानव को सबक सिखाना होगा।"

लोमड़ी बोली, "महाराज! सबक तो हम सिखाएंगे, लेकिन पहले हमें वर्षा को मनाना होगा। नही ˙तो हमारी प्रजा पानी के अभाव में दम तोड़ने लगेंगी।"

"हूं, तुम ठीक कहती हो। हमें किसी रणनीति के तहत काम करना होगा। तुम बताओ हमें क्या करना चाहिए?" शेर ने भालू से पूछा ।

"महाराज! मंत्री जी ठीक ही कह रहे हैं। हमें वर्षा को मनाना ही होगा और मेरी समझ से यह काम मेढक, झिंगुर और चातक अच्छी तरह कर सकते हैं। झिंगुर सुबह शाम अपने संगीत से, मेढक अपने गीतों से वर्षा को रिझाएं और चातक दिन भर पानी-पानी पुकारे, तो हो सकता है वर्षा का दिल पसीज जाए।" भालू ने उत्तर दिया।

लोमड़ी बोली, "क्षमा चाहती हूं महाराज! मेरी समझ से केवल वर्षा को रिझाने से काम नहीं बनेगा, क्योंकि वर्षा समुद्र में सोई हुई है। उसे उठाने का काम तो सूरज ही कर सकता है और सूरज को तो मोर ही खुश कर सकते हैं।"

"तुम भी कैसी बात करती हो? सूरज कैसे उठाएगा भला वर्षा को? एक आसमान में और दूसरा समुद्र में।" राजा ने मंत्री को झिड़की दी।

"मंत्रीवर ठीक कह रहे हैं महाराज! सूरज की तपन से वर्षा उठकर भाप के वेश में सागर से आसमान में आ जाती है और फिर बादल का रूप बना लेती है और खूब पानी बरसकर सूरज की तपन दूर करके नदियों से होकर सागर में चली जाती है। इस तरह वर्षा सागर से आसमान, आसमान से धरती, धरती से समुद्र और समुद्र से फिर आसमान का चक्कर लगाते रहती है।

वर्षा के इस तरह चक्कर लगाने को वर्षा का चक्कर (वर्षाचक्र) कहते हैं। अगर सूरज अपनी तपन बढ़ाए, तो वर्षा जाग जाएगी, महाराज!"

"अच्छा, यह तो अच्छी बात है। जैसे वर्षा सूरज का खयाल रखती है, वैसे ही हमें भी एक-दूसरे का खयाल रखना चाहिए। खैर, सूरज को प्रसन्न करने का काम मोर करेंगे।"

गिलहरी जो अभी तक चुपचाप सबकी बातों को सुन रही थी, अचानक बोली, "क्षमा महाराज! छोटे मुंह बड़ी बात। मैं भी कुछ कहना चाहती हूं।"

"हां-हां! क्यों नहीं। इसीलिए तो यह बैठक बुलाई गई है। हमारा शासन पूरा लोकतांत्रिक है। हर किसी को अपनी राय रखने का अधिकार है।" शेर ने गिलहरी को अभयदान दिया।

गिलहरी बोली, "महाराज, हमारे पास व्यवस्था न होने के कारण हमारे कई साथी हमसे बिछुड़ गए हैं। वर्षा के नाराज होने का कारण मनुष्य की करतूत है और खामियाजा हमें भुगतना पड़ रहा है।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?" शेर ने झिड़की दी।

"महाराज, हमें वर्षा को रोकने के लिए जगह-जगह तालाब और गड्ढे बनाने होंगे ताकि वर्षा का जल उनमें एकत्र हो जाए और हम बाद तक उसका प्रयोग करते रहें। साथ ही हमें जगह-जगह से बीज लाकर जंगल में फैलाने होंगे, जिससे वर्षा के आने पर बीज उगकर चारों ओर हरियाली हो जाएगी और फिर वर्षा नाराज भी नहीं होगी। आखिर हरियाली न होने से ही तो वर्षा नाराज हुई है न!"

लोमड़ी बोली, "बात तो गिलहरी की ठीक है, महाराज!"

अचानक चूहा, खरगोश व नेवला खड़े होकर कहने लगे, "धरती में बिल बनाने का काम तो हमें दे दीजिए। हम सारी धरती में इतने बिल बना देंगे कि वर्षा की एक भी बूंद बेकार नहीं जाएगी। सारा पानी धरती के अंदर जाएगा। इस तरह भूमिगत जल का स्तर ऊपर उठ जाएगा और पानी की कमी नहीं होगी।"

अब तो हाथी, भालू और सूअर भी जोश में आकर कहने लगे, "महाराज, धरती में गड्ढे और तालाब हम बनाएंगे। इनमें अटका पानी बहुत दिनों तक हमारे काम आएगा।"

सभी की बातें सुनकर राजा शेर प्रसन्न होकर बोला,"शाब्बाश! अब आप सब लोग अपने-अपने काम में जुट जाओ और मैं स्वयं सारे जंगल की पहरेदारी करूंगा, ताकि कोई भी मानव एक भी पेड़ न काट सके।"

दूसरे ही दिन से सभी ने अपना काम प्रारंभ कर दिया। ज्यों ही सुबह सूरज लालिमा लेकर पर्वत के पीछे से आता, मोर अपने पंख फैलाकर उसका स्वागत करते। दिन का प्रथम प्रहर बीतते ही पपीहे आसमान में जाकर पानी-पानी की रटन लगाते। चूहा ,खरगोश व नेवला धरती में बिल बनाने लगे। सूअर अपने तेज दातों से पहले जमीन खोदता और फिर अपने शरीर से मिट्टी को घिसट-घिसटकर चारों ओर फैलाकर तालाब बनाने लगा और भालू अपने नाखूनों से। शेर जंगल की चौकीदारी करने लगा।

देखते ही देखते दो महीने बीत गए, लेकिन वर्षा नहीं जागी। सूरज ने सोचा, 'सारे जीव मेहनत कर रहे हैं। मुझे वर्षा को जगाना ही होगा।'

उसने सुबह से ही तपना शुरू कर दिया। सूरज की तपन बढ़ने से वर्षा की नींद खुल गई और वह अंगड़ाई लेकर भाप के रूप में उठकर आसमान में जाने की तैयारी करने लगी।

इधर एक दिन शेर ने गश्त पर जाते समय मेढकों को बड़े पत्थर के नीचे आराम करते देखा, तो गुस्से से बोला, "सब अपना काम कर रहे हैं और तुम आराम फरमा रहे हो?"

मेढक हांफते हुए बोला, "क्षमा महाराज! मैं कल से ही अपने पूरे कुटुम्ब के साथ 'मेघ मल्हार' राग गाना शुरू कर दूंगा।"

दूसरे ही दिन से मेढक सुबह 'पौ' फटने से पहले ही 'मल्हार' गाने लगे। फिर मोरों ने सूरज का स्वागत करने को अपने पंख फैलाए, तो भाप के वेश में आसमान में आई वर्षा ने सोचा, मोर उसका स्वागत कर रहे हैं।

वर्षा खुश होकर बादल का वेश बनाकर हवा के साथ खेलते हुए आसमान को ढकने लगी। आसमान में बादल छाया देखकर गिलहरियों का समूह खुश होकर बीजों को खोजने निकल पड़ा।

इधर दिन का प्रथम प्रहर बीतते ही मेढकों ने फिर मल्हार राग अलापना शुरू किया और झिंगुरों ने संगीत देना। मोर नाचने लगे और वर्षा खुश होकर रिम-झिम करती धरती की ओर आने लगी।

धीरे-धीरे रिम झिम फुहारों में बदल गई और फुहार बौछारों में। खूब वर्षा हुई। जानवरों द्वारा बनाए गए तालाब पानी से भर गए। वर्षा के चक्कर से जंगल में मंगल हो गया। अपनी मेहनत का रंग देखकर सारे जंतुओं की ख़ुशी का ठिकाना न रहा और वे दौड़ते हुए अपने राजा के पास गए।

राजा ने सभी का स्वागत किया और बधाई देते हुए कहा, "साथियों आप सभी की मेहनत रंग लाई है और मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है। किंतु हमें इस मानव से सावधान रहना होगा।" ❁

रेनबो टापू की पिकनिक

यद्यपि ढोलकपुर में कोरोना का प्रकोप नहीं आया था, मगर वहां के राजा ने प्रजा के हित में अनेक जरूरी पाबंदियां लगा दी थीं। इससे बच्चों की पढ़ाई, खेलकूद व मेलजोल पर बहुत असर पड़ा।

छोटा भीम सोच रहा था कि इस तरह तो हमारा बचपन का अनमोल समय यूं ही बेकार चला जाएगा। उसने अपने मन की बात छुटकी और राजू को बताई। उन्हें भी घर पर बंद रहने से घबराहट होने लगी थी।

इधर कुछ समय बाद कोरोना का असर कम होने लगा। तभी एक दिन छुटकी और राजू भीम के घर की छत पर एकत्र हुए और कहीं पिकनिक पर जाने की बात पर सहमत हुए। उन्हें पता था कि घर वाले पिकनिक की इजाजत नहीं देंगे।

अब समस्या यह थी कि किस बहाने से घर से बाहर जाएं? आखिर छुटकी ने सुझाया, "हमारे दोस्त जग्गू का बर्थडे है। उसने पार्टी के लिए बुलाया है। ऐसा कहकर चल देंगे।"

सबको यह आइडिया ठीक लगा और अगले दिन सुबह छोटा भीम, छुटकी और राजू समुद्र के किनारे खजूर के टीले पर आ गए। जग्गू वहीं खजूर के पेड़ पर मिल गया। उसे सारी बात बताई। वह भी साथ चलने को तैयार हो गया।

समुद्र के किनारे एक नाव पड़ी थी। चारों उसमें बैठे और कुछ ही दूरी पर स्थित रेनबो टापू की ओर चल पड़े। नाव धीरे-धीरे रेनबो टापू की ओर बढ़ रही थी। चारों के चेहरों पर बहुत खुशी थी। बहुत दिनों बाद घर से बाहर निकले थे। फिर समुद्र में नाव यात्रा, शीतल पवन के झोंके। एक घंटे बाद वे सभी हंसते गाते रेनबो टापू पर उतरे।

SHIVANI

यह टापू बहुत ही सुंदर था। यहां नाना प्रकार के पेड़, फूल वाले पौधे, रंग-बिरंगी तितलियां, चहचहाते पक्षी और अनेक प्रकार के जीव जंतु थे। इस टापू से प्रातःकाल इंद्रधनुष का अनुपम दृश्य दिखाई देता था, इसीलिए इसका नाम रेनबो टापू पड़ा।

छोटा भीम की अगुवाई में सभी उछलते-कूदते टापू की सैर करने लगे। जग्गू पेड़ पर चढ़कर फल गिराता, तो सभी खाकर प्रसन्न होते। छुटकी को फूल बहुत पसंद थे, वह उनके पास जाती और बातें करने लग जाती। इधर राजू तितलियों का दीवाना था, वह उनके पीछ-पीछे दौड़ लगा रहा था। छोटा भीम कुछ सोच की मुद्रा में बैठा था। उसने किसी से सुना था कि इस टापू पर एक वनमानुष रहता है। आज वह नजर नहीं आ रहा, क्या बात है? कहां गया है?

बहुत देर तक टापू पर मौज मजे करने के बाद चारों किनारे पर आए, जहां उन्होंने नाव छोड़ी थी। सबसे पहले छोटा भीम की नजर पड़ी और वह जोर से बोला, “अरे! हमारी नाव कहां चली गई?”

वास्तव में किनारे पर नाव नहीं थी। सबने इधर-उधर बहुत खोज की। मगर नाव नहीं मिली। तभी जग्गू ने जमीन की ओर इशारा करके कहा, “देखो, यह वनमानुष के पैरों के निशान हैं। जरूर वही हमारी नाव को लेकर चला गया है।”

सबको जग्गू की बात सही लगी। ‘अब क्या करें?’ यही सवाल सबके दिमाग में दस्तक दे रहा था। छुटकी और राजू तो रोने लगे। उन्हें घर की याद सताने लगी और मन में वनमानुष का डर भी समाया था।

छोटा भीम मुसीबत से घबराता नहीं था। वह उसका मुकाबला करने का उपाय सोचने लगा। उसने छुटकी से कहा, “तुम फूलों से बात कर सकती हो। उनसे पूछो कि इस मुसीबत से हम कैसे बच सकते हैं? और तुम राजू, तितलियों की भाषा समझते हो। उनसे पूछो, शायद कोई रास्ता मिल जाए।”

कुछ देर बाद छुटकी और राजू ने आकर एक ही बात बताई कि सामने ऊंचाई पर स्थित भारी चट्टान से प्रार्थना करें तो समस्या का समाधान हो सकता है। चारों दोस्त चट्टान के पास पहुंचे। आंख मूंदकर दिल से प्रार्थना करने लगे।

तभी वहां एक आवाज सुनाई दी- “बच्चो! घबराओ मत। मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं मगर एक शर्त है।”

छोटा भीम ने झट से कहा, “हमें आपकी हर शर्त मंजूर है।”

फिर वही आवाज सुनाई दी, “तुम सब अपने घर वालों से झूठ बोलकर आए हो। यह अच्छा नहीं किया। अब तुम सच बोलने का वादा करो, तो मैं तुम्हें यहां से जाने का साधन दे सकता हूं।”

बच्चों को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने हाथ जोड़कर संकल्प किया कि अब हम कभी झूठ नहीं बोलेंगे। तभी वही भारी आवाज

फिर से सुनाई दी, “मैं तुम्हें एक जादुई घोड़ा दे रहा हूं। वह तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देगा।”

सबने आंखें खोलीं, तो देखा वास्तव में एक सुंदर सफेद पंख वाला घोड़ा तैयार खड़ा था। उन्होंने फिर से आंख बंद कर बड़ी चट्टान का शुक्रिया कहा।

सभी जादुई घोड़े पर चढ़ने लगे तभी घोड़े ने कहा, “मुझ पर केवल जग्गू ही बैठ सकता है। आप सब आपस में हाथ पकड़कर मेरे साथ साथ चलो। मैं सभी को समुद्र पार आपके घर के पास छोड़ दूंगा।”

जादुई घोड़े की बात मानकर सभी उसके अनुसार उड़ते हुए कुछ ही मिनटों में समुद्र के किनारे अपने घर के पास आ गए। उन्होंने आपस में एक दूसरे को देखा, सबके चेहरे पर घर आने की ख़ुशी थी। सबने फिर से संकल्प दोहराया कि सदा सत्य बोलेंगे। झूठ बोलकर कोई काम नहीं करेंगे।

अपने लेखक को जानिए

प्रकाश तातेड़ : सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य। बाल साहित्य एवं विज्ञान संबंधी पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित। अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, स्मारिकाओं, अभिनंदन ग्रंथों, संकलनों का संपादन। संप्रति : विगत 3 वर्षों से 'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका में सह संपादक।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।
आखिर तुम सबमें से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

पायस के स्वरूप में कुछ बदलाव लाया गया है। हम कोशिश करेंगे कि किसी एक स्कूल के बच्चों की प्रतिभा को सामने लाएं।
इसके लिए पायस से जुड़े सभी बच्चों और शिक्षकों से निवेदन है कि वे इस रचनात्मक कार्य में सहयोग दें और अपने स्कूल के बच्चों की प्रतिभा को निखारें।
इस क्रम में हम उत्तराखंड के नानकमत्ता के 'नानकमत्ता पब्लिक स्कूल' से शुरुआत कर रहे हैं।

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल पिछले एक दशक से ग्रामीण उत्तराखंड में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है। सन 2012 में स्कूल की स्थापना पांच संस्थापकों द्वारा की गई। इस संस्थान का मकसद समग्र शिक्षा देना है जो ग्रामीण उत्तराखंड के परिपेक्ष्य में हो। परंपरागत शिक्षा से इतर, यहां सीखने के सरल, सहज और खेल संबंधी तरीकों की ओर कदम बढ़ाया जा रहा है। यहां शिक्षक और शिक्षार्थी साथ मिलकर शिक्षा को मज़ेदार बनाने का काम करते हैं। सभी लर्नर्स से बने इस स्कूल का सपना एक ऐसा स्पेस बनाना है जहां बच्चे खेल-खेल में अपने समुदाय के साथ शिक्षा लें। नानकमत्ता पब्लिक स्कूल एक सामूहिक प्रयास है जिसे देश के अलग-अलग हिस्सों के संस्थानों और लोगों ने बनाया है, और जिसे अभी भी बनाया जा रहा है।

रंगों को कोई और रंग ना दो तुम

हर त्योहार, हर एक को मुबारक़ हो,
सब एहसास करें ख़ुशियों का।
घर के अंदर और घर के बाहर भी
महसूस हो ख़ुशी, रंगों की तरह।

लाल, गुलाबी, नीला, केसरिया और हरा,
रंग ही तो हैं, क्यों ना सब उजले से लगें।
हर एक रंग अलग से उतना ही दमके,
जितना सुंदर वह सबके साथ लगता है।

ना तुम मेरे रंग की कहानी पूछो,
ना मैं तुम्हारे रंग का इतिहास।

आओ मिलकर इन सब रंगों को
तुम्हारे चेहरे पर बना दें ख़ासम-ख़ास।

कुछ इस तरह समा जाएं
तुम्हारे चेहरे पर ये रंग।
देखने वाले को महसूस हो सके कि
हर एक रंग अधूरा है दूसरे के बिना।

बस यही एक छोटी सी आरज़ू है कि
इन रंगों को कोई और रंग ना दो तुम।
यही रंगों भरी मेरी होली है,
यही मेरा ख़ुशियों का त्योहार है।

अपने लेखक को जानिए

कमलेश अटवाल

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल के सहसंस्थापक और अकादमिक समन्वयक हैं। पिछले एक दशक से ग्रामीण उत्तराखण्ड में सीखने सिखाने से जुड़े हैं।

बंदर संग होली

नानकमत्ता के एक गांव में सचिन नाम का एक बच्चा रहता था। वह बहुत गरीब था। घर में केवल मां थीं, पिता नहीं थे। मां मजदूरी करके घर चलाती। इसी तरह गुजारा चलता।

होली आने वाली थी। सब ओर होली की धूम मचने लगी। सचिन सबको होली की तैयारी करते देखता, तो उसका भी दिल करता कि वह भी खूब जमकर होली खेले।

सचिन के पड़ोस में रमेश नाम का एक बच्चा रहता था। उसके पिताजी उसके लिए एक नई पिचकारी लाए। शानदार पिचकारी को देख सचिन का मन भी पिचकारी के लिए मचल गया। शाम को जब उसकी मां घर लौटीं, तो सचिन नई पिचकारी के लिए जिद करने लगा।

सचिन की मां ने उसे समझाया, “बेटा अभी मेरे पास पैसे नहीं है घर चलाना ही मुश्किल होता है बेटा। इसलिए इस होली पर ऐसे ही काम चला लो।”

परंतु सचिन नहीं माना। आखिर उसकी मां सेठ धनपत राय के यहां गई और उनसे कुछ पैसे उधार लेकर आईं। उधार के पैसों से खरीदारी करने के लिए सचिन को लेकर उसकी मां बाजार गईं।

सचिन आज बहुत खुश था। उसने एक बढ़िया सी पिचकारी खरीदी। उसकी मां ने कुछ नहीं कहा। बेटे की खुशी देखकर वह बहुत खुश थीं।

अगले दिन होली थी। हर घर में पकवान बन रहे थे। सचिन की मां ने भी उसके लिए थोड़े से गुलगुले बनाए। नाश्ता करके सचिन खुशी से बोला, “माँ , अब मैं होली खेलने जाता हूं। मैं अपने सब दोस्तों को इस पिचकारी से भिगो दूंगा।”

हाथ में पिचकारी लिए सचिन घर से बाहर दौड़ा। उसके घर के बाहर पेड़ पर एक बंदर बैठा हुआ था। उसने झपट्टा मारा और सचिन से पिचकारी लेकर फिर पेड़ पर चढ़ गया।

अब सचिन रोने लगा। उसने गुस्से से एक पत्थर बंदर पर फेंका। बदले में बंदर ने पिचकारी से उस पर रंग फेंका। सचिन रंग से सराबोर हो गया। उसने फिर पत्थर फेंका। बदले में बंदर ने फिर उस पर रंग फेंका।

अब सचिन को मज़ा आने लगा। उनका यह अनोखा खेल देखकर मोहल्ले के और बच्चे भी आसपास इकट्ठे हो गए। जब सचिन की पिचकारी में रंग खत्म हो गया, तो बंदर ने पिचकारी नीचे फेंक दी। अब पता नहीं क्या हुआ, एक बच्चे ने अपनी पिचकारी बंदर की ओर बढ़ा दी। बंदर ने भी उसके हाथ में पिचकारी ली और बच्चों पर चलाने लगा।

अब तो यह खेल बढ़ गया। बंदर के हाथ की पिचकारी से जब रंग खत्म होता , तो कोई न कोई बच्चा उसे अपनी पिचकारी थमा देता।

करीब घंटे भर तक यह खेल चलता रहा। अब बंदर भी थक गया था। वह पेड़ से नीचे आया और सचिन की तरफ हाथ हिलाकर जाने लगा।

तभी सचिन बोला,“रुको, मैं अभी आया।”

वह भागकर घर में गया और दो केले उठा लाया। उसने केले बंदर की ओर बढ़ाए, तो बंदर ने खुशी-खुशी केले ले लिए। यह देख और बच्चे भी अपने-अपने घर की ओर भागे और कुछ न कुछ खाना बंदर के लिए ले आए। बंदर भी मजे लेकर खाता रहा।

दोपहर हुई, तो बंदर चलता हुआ सबकी आंखों से दूर हो गया। बच्चे भी खुशी-खुशी अपने घर लौटे।

यह अनोखी होली सबके लिए यादगार बन गई।

नाम : बबीता जोशी
उम्र : 16, कक्षा : 11,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

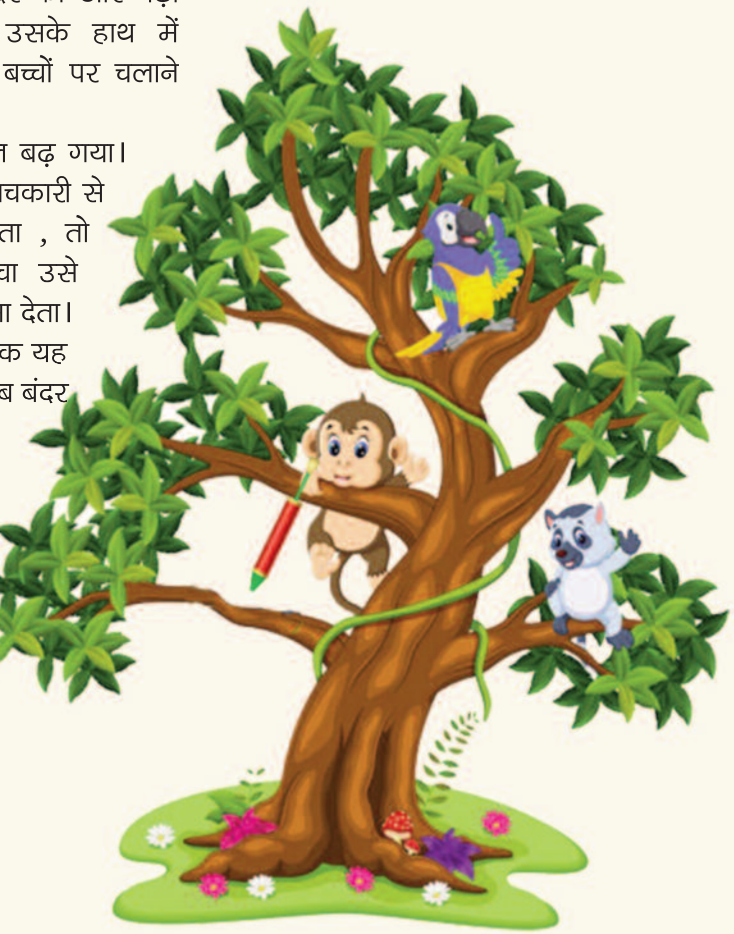

दोस्तों की होली

होली आने से पहले बच्चों के मन में कई प्रकार की योजना बनने लगती है। ऐसा ही प्रदीप और अनुराग कर रे थे। प्रदीप पहाड़ी समाज से और अनुराग थारू समाज से था।

एक दिन जब दोनों स्कूल जा रहे थे, तो अनुराग प्रदीप से बोला, "अब तो होली आने वाली है। मैं तुझे रंग लगाकर लाल कर दूंगा। उसके बाद ही होली की छुट्टी में गांव में जाकर होली गाऊंगा।"

प्रदीप ने जवाब दिया, "इस बार मैं अपने गांव नहीं जा पाऊंगा।"

अनुराग प्यार से बोला, "कोई बात नहीं, तुम मेरे साथ मेरे गांव चलना। मेरा गांव तो पास में ही है, हम वहां होली खेलेंगे, एक-दूसरे को रंग लगाएंगे।"

प्रदीप को याद आता है कि उसे तो मम्मी 100 रुपए देने वाली है और उसके लिए रंग लेकर आने वाली हैं। लेकिन प्रदीप कहता है,"हम वहां किसके साथ होली खेलेंगे ?"

तभी अनुराग कहता है, "मेरे गांव में मेरे बहुत से दोस्त हैं।"

प्रदीप अनुराग के साथ उसके गांव गया और उसने वहां होली गाते हुए लोगों को देखा। प्रदीप को कुछ समझ नहीं आया। उसने अनुराग से पूछा, "यह क्या गा रहे हैं ?"

अनुराग ने बताया, "हमारे थारू समाज में होली का गीत गाकर, साथ-साथ नाचकर होली मनाई जाती हैं।"

अनुराग ने प्रदीप से पूछा, "तेरे यहां होली कैसे बनाते है ?"

"जब मैं अपने गांव जाता था, तो दिन में तो लोग एक दूसरे को रंग लगाते थे। शाम के समय सब लोग मिलकर भीन गाते थे। और आलू के गुटके भी बांटते थे। मजा भी बहुत आता था।"

अनुराग बोला, "हमारे मास्टर साहब कह रहे थे कि होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती हैं। इस दिन बुराई पर अच्छाई की जीत हुई थी।"

दिन भर होली खेलने के कारण अनुराग और प्रदीप थक गए थे। वे खाकर जल्दी ही सो गए।

नाम : अंकित भट्ट
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

घर का रंग

एक लड़का था जिसका नाम गुड्डू था। वह बहुत अच्छा लड़का था। उसे त्योहार बहुत पसंद थे। उसका प्रिया त्योहार होली था।

एक बार होली का त्योहार आया। गुड्डू बहुत उत्साहित था। हम दोस्तों ने सोचा, चलो होली पर एक गेम खेलेंगे। हमने फ्री फायर खेलने का प्लान बनाया। हम बम गुब्बारे को मानेंगे और पिचकारी को गन और बीच में रंगबाज वाला पानी रख देंगे।

और हमने बहुत मजे किए। अगले साल फिर होली आई, लेकिन इस बार गुड्डू के पास ज्यादा पैसे ना होने के कारण वह पिचकारी नहीं ले पाया। मैंने अपनी पिचकारी उसको दे दी और एक नई पिचकारी ले ली। उसने कहा, कलर मैं लाऊंगा। फिर हमने होली बहुत धूमधाम से मनाई और हमने देखा कि बाकी बच्चों के ऊपर से रंग नहीं उतरे।

मैंने गोलू से पूछा "हमारे रंग कैसे उतर गए ?"

उसने बताया, "यह रंग नेचुरल दे जो कि मैंने घर में बनाए थे।"

हमने गोलू का धन्यवाद किया और कहा कि अगली बार की होली हम नेचुरल कलर के साथ खेलेंगे ।

नाम : सुमित शर्मा
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

एक होली ऐसी भी

नाम : करन चन्द
उम्र : 14, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

वैसे तो होली खुशियों व रंगों का त्योहार है, पर पिछली होली में हुई एक घटना आज भी मेरे रोंगटे खड़े कर देती है।

यह बात पिछले साल की है, जब मैं और मेरे तीन दोस्त निर्मल, अमित और अंकित ने मिलकर योजना बनाई कि हम जंगल के रास्ते होकर अपने एक और दोस्त जिसका नाम अनुराग है, के घर जाएंगे।

लगभग 12 बजे करीब हम चारों उसी जंगल के रास्ते अनुराग के घर जा रहे थे। तभी हमारी नजर वहीं कुछ दूर पर बने एक वीरान घर पर पड़ी। हम सभी ने सोचा कि कभी समय निकालकर हम इस घर में घूम लेंगे।

लगभग 1 बजे हम अपने उस दोस्त के घर पहुंच गए। फिर हमने वहां सभी को होली की बधाइयां दीं, व सभी को रंग लगाया। वहां के लोग होली में केवल रंग ही नहीं लगते थे, बल्कि उनकी एक परम्परा थी, जिसमें वे सभी एक गोले में खड़े होकर एक साथ गाते और एक ही तरह गोलाई में चलते। यह देखने में बहुत शानदार था।

अब चार बज गए थे, और हमने तय किया था कि हम चार बजे घर चले जाएंगे। घर जाने से पहले हमने सभी से विदा लिया और अनुराग भी अब हमारे साथ चलने वाला था।

हम उसी जंगल के रास्ते घर जा रहे थे। हम आए थे। फिर हमें वही पुराना बड़ा सा वीरान घर दिखाई दिया। हम पांचों ने तय किया कि हम उस घर में एक बार घूमकर ही आते हैं।

जब हम घर के अंदर गए, तो वहां हमने एक तसवीर देखी, जो एक बच्चे की थी। पर न तो वहां कोई इंसान था और न ही कोई जानवर। अंकित हम पांचों में से सबसे ज्यादा

शरारती था और उसने जाकर वह तस्वीर तोड़ दी। तभी अचानक कुछ हलचल हुई और उसी के साथ एक अजीब सी हंसी की आवाज भी आने लगी।

अचानक एक आवाज हमारे कानों में आई जो कह रही थी कि मैं वापस आ गया। यह सुनते ही हम चारो वहां से भाग निकले। अंकित भागते-भागते गिर गया, और उसे बहुत चोट लगी। हम चारों दोस्तों ने उसको वहां से बाहर निकाला।

पर इतना ही भगवान को मंजूर नहीं था, अचानक वह घर भी गायब हो गया, और यह देखते ही हम पांचों डर के मारे सहम गए।

अंकित को यह देखते ही दिल का दौरा पड़ गया और उसकी मौत हो गई। हम चारों को इसका पता नहीं चल पाया कि इसकी मौत हो गई है। हमें लग रहा था कि इसे चोट लगी है, तो इसी के कारण यह बेहोश हो गया है। हम चारों ने उसे उठाया और उसे अपने गांव में ले आए। उसके घर पहुंचते ही उसके पापा ने डॉक्टर को फोन किया। कुछ देर बाद जब डॉक्टर आया तो उसने अंकित को देखते ही कह दिया कि इसकी मौत हो चुकी है।

तब से आज तक हम चारों की यह हिम्मत नहीं हुई कि यह बात हम किसी को नहीं बता पाए कि उस होली पर क्या हुआ था, क्योंकि आज भी होली सुनते ही हम चारों के सामने अंकित की तसवीर आ जाती है और वह खौफनाक होली की याद भी जिससे हम चारों डर से सहम जाते हैं।

रंग-बिरंगे दिन आए

होली आई होली आई।
रंग बिरंगे दिन आए।
अरे यह क्या!
क्या आप सबको पता था?
देश रंगीला एक गाना भी होता है।
एक और चीज़,
जब मुझे कोई रंग लगाता है,
तब मैं भाग जाती हूं।
मम्मी के पास किचन में।

नाम : आरोही अटवाल
उम्र : 7, कक्षा : 2,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

खुशियों के दिन

आओ बहना आओ भैया,
चलो हम बना लें टोली
आज है खुशियों का दिन,
क्योंकि आज है होली।
कुछ खुशियां सभी में बांटो,
और कुछ खुशियां जीवन में लाओ,
कलर किसी को न लगाना,
सबमें खुशियों को लगाओ।

नाम : चेतन चंद
उम्र : 14, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली की बात

एक दिन की बात है,
होली का दिन नजदीक था।
मैं बहुत उत्सुक थी,
पर पेपर की टेंशन जा रही थी खाई।
पेपरों के दिनों में होली!
यह बात कुछ हजम नहीं हुई,
भाई ज़रा बात को बनाओ मलाई।

मार्च के महीने में आता है,
रंग-बिरंगा दिन कहलाता है।
होली उसका नाम है ,
दुश्मनी भुलाने का त्यौहार है।
पर एक सवाल यह है उससे
कि मार्च यानी पेपरों के समय में
ही क्यों आता है?

बच्चों को टेंशन पढ़ाई की ,
टीचरों को टेंशन पेपर बनाई की।
यह तो कबाब में हड्डी बन गए
हम होली का त्यौहार मना ही नहीं पाए।
वह रंग ,वह मज़ा ,वह लड़ाई ,
सब पेपरों में मिल गई।
एक दिन की बात,यहीं समाप्त हो गई।

नाम : अंशदीप कौर
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

विश्व पुस्तक मेला के बहाने दिल्ली भ्रमण

तीन दिवसीय अपनी दिल्ली यात्रा के दौरान नानक मत्ता पब्लिक स्कूल के 47 शिक्षार्थियों ने लगभग 10 घंटे विश्व पुस्तक मेले में बिताए। किताबों की दुनिया में किताबों, प्रकाशकों और लेखकों से मिले। इस दौरान पढ़ने की संस्कृति, किताबी दुनिया में हो रहे क्रांतिकारी बदलाव, टेक्नोलॉजी के प्रभाव आदि को अनुभव भी किया।

शिक्षार्थियों ने दिल्ली में कुतुब मीनार, लौह स्तंभ, लाल किला, चांदनी चौक, शीशगंज गुरुद्वारा साहिब, बांग्ला साहिब, कनॉट प्लेस, कॉफ़ी हाउस, सेंट्रल पार्क और पालिका बाजार में भी भ्रमण किया।

यात्रा के अंतिम पड़ाव पर सबने केंद्रीय दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय का अवलोकन किया।

इस दौरान बच्चों ने इतिहास बनने और उसका दस्तावेज़ीकरण करने की प्रक्रिया को सिक्कों, मिट्टी के बर्तनों,

पाषाण युग के औज़ारों, कपड़ों, वाद्य यंत्रों, मूर्तियों, आभूषणों, बर्तनों, हथियारों, लिपियों और अलग-अलग तरह के अवशेषों से समझा। इधर राष्ट्रीय संग्रहालय में भी बदलाव हुए हैं और वहां पर ऑडियोवीज़ुअल पर ज्यादा ध्यान दिया गया है।

3 रात और 5 दिन की यह यात्रा शिक्षार्थियों ने पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन और दिल्ली मेट्रो में की। इस दौरान उन्होंने एक शहर, उसके लोगों, संस्कृति और बनावट को समझा। मोतीबाग गुरुद्वारे में अपने प्रवास के दौरान सिख समुदाय की सेवा और मानवतावादी दृष्टिकोण को समझने और समुदाय के साथ लंबी बातचीत का मौका भी मिला।

कम संसाधनों और उनके समावेशी उपयोग को आधार बनाकर पूरी यात्रा का प्रबन्ध साथियों ने स्वयं किया। उन्होंने ही तय किया कि किस जगह पर और कब किस तरह से पहुंचा जाए।

इस यात्रा से एक बात स्पष्ट तौर पर निकलकर आई कि सीखना तब रोचक होता है जब शिक्षार्थी उसको खुद देखकर महसूस कर सकें। वह चाहे इतिहास के सिद्धांत या घटनाएं हों, या फिर भूगोल में आबादी की बनावट, शहरीकरण, या फिर ऐतिहासिक इमारतों की बनावट शैली।

खुशियों का त्योहार

नाम : आईशा कौर
उम्र : 14, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली एक त्योहार है ऐसा
जिस पर
न हिरण्यकशिपु की जीत हुई,
ना हुई हार प्रह्लाद की
और ना ही उसके विश्वास की ।
होलिका बैठी वरदान प्राप्त कर अग्नि में लेकर प्रह्लाद को,
प्रह्लाद पर हुए थे अत्याचार कई-
लेकिन कर्म ने कर दिया
अग्नि में दहन, होलिका के अहंकार को।
लेकिन,थी भी तो हिरण्यकशिपु की बहन
फिर होनी ही थी होलिका दहन।
ऐसे ही-बुराई पर अच्छाई की हुई जीत,
और अभी तक चल रही है होली की पौराणिक रीत।
अब रंगों की रंगीन खुशियां लेकर आई है होली,
और हर वर्ष बुराई पर अच्छाई है बोली ।
प्रह्लाद के विश्वास की लीला थी अपरंपार
और इसलिए मनाया जाता है हर वर्ष यह खुशियों का त्योहार।

खुशियों की बौछार

होली का त्योहार है आया
खुशियों की बौछार हैं लाया
इस कदर बच्चों ने उल्लास दिखाया
होली का त्योहार आया
दुश्मन भी दोस्त बन जाते
और गले मिलकर रंग लगते
पिचकारी से हम खेलेंगे
रंग गुलाल उडायेंगे
बड़े बूढ़ों का आशीर्वाद लेकर
उनको रंग लगाएंगे।।

नाम : भावना कठायत
उम्र : 14, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

रंग देखे खूब सारे

होली आई होली आई
खुशियों की बौछार लाए
रंग भी देखे खूब सारे
कुछ पहचाने कुछ अनजाने
गुजिया भी खाई और कुछ मिठाई
कुछ बाटी पड़ोस में
कुछ डाली पेट में
दिन भर होली खेली
फिर पहने नहीं कपड़े
लेकिन कर दी किसी ने गंदे
पर होली है खुशियों का त्योहार
मजे करो मेरे यार।

नाम : करण थापा
उम्र : 11, कक्षा : 6,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली की यादें

कुछ पुरानी याद है
मुंह में गुझिया का स्वाद है
रंगों की खुशबू है जिसमें
हां, होली की बात है।
बच्चों के हाथों की पिचकारी
बुजुर्गों के हाथों की थाली
रंग गया है हर कोना उसका
फींकी थीं जो गलियां सारी।
ढोल की धुन में नाच रहे हैं
ले पकवानों का स्वाद रहे हैं,
गुजिया, पापड़, चाय और लड्डू
एक दूजे को बांट रहे हैं।

नाम : जिया कठायत
उम्र : 14, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली में पकवान

होली में रंगों का काम,
हम सबने करवाया है;
होली में पकवान बनेंगे,
हर घर में कुछ नये बनेंगे;
कहीं पकौड़े कहीं जलेबी,
कहीं तो गुझिया जैसे पकवान;
होली में गालों पर
हम गुलाबी रंग चढ़ाएंगे।
गालों में जब लगें गुलाल,
तब हो जाता बुरा हाल।

नाम :नताशा चंद
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

रंगों की बरसात

होली आई , होली आई...
रंगों की बरसात है लाई
तुम भी आओ,
हम भी आए,
रंगों का नया आसमा सजाएं।
होली है रंगों का त्योहार
मनाए इसे हम हर एक साल
हरा, गुलाबी, नीला रंग
इसको रंग दो..उसको रंग दो..
हर तरफ है यही उमंग
होली आई ,होली आई,
रंगों की बरसात है लाई।।

नाम : नवजोत कौर
उम्र : 15, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

त्योहार आया है

रंगों का त्योहार आया है,
खुशियों की बौछार लाया है।
मम्मी ने गुझिया बनाई है,
सबके होठों में मुस्कान आई है।

नैचुरल रंग ही लाएंगे,
अपना फ्रेंड सर्कल बढ़ाएंगे।
पकवानों का लुफ्त उठाएंगे,
पानी के गुब्बारे फुलाएंगे।

सबके मुंह में रंग लगाएंगे,
फिर गुब्बारो से भिगाएंगे।
अच्छी-अच्छी पिचकारियां लाएंगे,
उससे सबको नहलाइंगे।

इस होली मजे आएंगे,
सबको रंगीन बनाएंगे।

नाम :प्रिंस जोशी
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

इतने रंग उड़ाएंगे

इस फाल्गुन
इतने रंग उड़ाएंगे
कि
होली भी शरमा जाए।
रंग हो
प्यार का, सम्मान का
सद्भावना का, सत्य का
शांति का, कुटुंबता का।
इस होली
इतने तोहफे बाटेंगे
कि
गम कम पड़ जाए।
तोहफे हो
फूल के, अपनों के साथ के
खुशियों के, निश्छल मन के
मौलिकता के, कर्तव्य के।
इस फाल्गुन
हम नया त्योहार बनायेंगे
होली को यूं सजाएंगे
हम नया त्योहार बनायेंगे।

नाम : राहुल पोखरिया
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

गुलाल गया कहां

आज दिन है होली का
मैं होली खेलू कैसे
पसंद है होली मुझे
पर आजकल के रंगों से डर लगता है
इस डर को मिटाऊं कैसे
ना जाने कहां खो गए वो असली रंग
ना जाने कहां गया वो सूखा गुलाल हमारा
उसकी जगह अब पक्के रंग आ गए
कहीं इसलिए तो नहीं खो गया गुलाल हमारा
डर लगता है अब रंगों को छूने से
कोई निशान तो नहीं रह जाएगा इन रंगों का
बदल गई देखो ना हमारी होली
अब सबको पानी से भिगोया जा रहा
जिस पानी को तरसते हैं किसान
उसको यूं ही बहाया जा रहा
मिलके मनाते थे जो त्योहार होली का
देखो ना, अब कैसे ही उसी दिन
नशे में ही गली में अब हंगामा मचाया जा रहा
ढोल बजाने और होली गाने की जगह
अब डीजे बजाया जा रहा
देखो ना कैसे होली का ये त्योहार
बस बदलता जा रहा

नाम : रेखा जोशी
उम्र : 15, कक्षा : 11,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

रंग-बिरंगी दुनिया

होली का त्योहार
होली का त्योहार है आया
अपने साथ खुशियां लाया
रंग-बिरंगी दुनिया लाया
होली का त्योहार है आया
बच्चों की टोली है आई
अपने साथ रंग लाई
नीला, पीला, लाल, गुलाबी
इतने सुंदर रंग लगाते
पिचकारी बच्चे भर कर लाते
एक दूसरे को खूब भिगाते
रंग सारे खूब उड़ाते
होली मिलकर मनाते
खूब सारी गुझिया खाते।

नाम : रिया ऐरी
उम्र : 13, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

खुशियों की बहार

होली रंगों का त्योहार है
खुशियों की बहार है
बच्चे-बड़े दोनों खेले
एक ऐसा त्योहार है
मिलन का होता ये दिन है
लौट आते सभी घर हैं
इस दिन का सबको रहता इंतज़ार है
प्यार से खेलें होली
और मचाये बहुत धूम हैं
त्योहार है ये प्यार-महब्बत का
लगता चेहरे पर गुलाल है।

नाम : साक्षी कांडपाल
उम्र : 14, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : उज्ज्वल कठायत
उम्र : 12, कक्षा : 6,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : अंशु प्रजापति
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : नंदेश प्रजापति
उम्र : 11, कक्षा : 6,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : अंश गुरो
उम्र : 7, कक्षा : 2,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : मनमिंदर कौर
उम्र : 9, कक्षा : 4,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

थारू समुदाय में होली

होली रंगों के साथ-साथ ख़ुशियों का त्योहार भी है, जिसमें लोग वैर - विरोध की भावना को एक तरफ रख कर, आपस में प्रेम की भावना जगाते हैं।यूं कह लो कि होली एक ऐसा त्योहार है, जो प्रेम की कोख से जन्मा है।

अलग-अलग समुदाय होली को विभिन्न ढंग से मनाते हैं। उन्हीं में से एक है (थारू समुदाय)। इस समुदाय में होली फागुन माह में अमावस्या के दूसरे दिन से खेली जाती है, जिसमें लोग घर-घर जाकर सुख समृद्धि के लिए लोकगीत गाते हैं एवं उन गीतों पर नाचते हैं और होली के पहलू की शुरुआत करते हैं। इन लोक गीतों से थारू समुदाय की विशिष्ट पहचान होती है।

किंतु आज के आधुनिक समय में यह लोकगीत खो से गए हैं। पुरखों का कहना है कि वर्तमान पीढ़ी इन लोकगीतों में रुचि नहीं लेती और इन गीतों में नाचने मे उन्हें शर्म आती है।

ऐसे में अगर वर्तमान पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को मजबूत नहीं बनाएगी, तो वह भावी पीढ़ी के लिए विरासत में क्या छोड़कर जाएगी ? जबकि हमें अपने पुरखों से प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम इन लोकगीतों को गाएं और भावी पीढ़ी को सौंप जाएं।

नाम : हर्षित राणा
उम्र : 14, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

क्यों मनाते हैं होली !

होली हिंदुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार है। यह त्योहार मार्च के महीने में बनाया जाता है। होली को रंगों का त्योहार भी कहा जाता है।

यह आनंद मस्ती और मौज का त्योहार है।

होली 2 दिन मनाई जाती है। होली से शरद ऋतु खत्म होती है और वसंत ऋतु शुरू होती है।

इस त्योहार से संबंधित एक प्रसिद्ध कहानी है। प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नामक एक अत्याचारी राजा था। दुष्ट राजा ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मार डालने को अपनी बहन होलिका को आदेश दिया। होलिका को ईश्वर द्वारा आग में ना जलने का वरदान प्राप्त था। वह प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठ गई। परंतु भगवान विष्णु ने प्रह्लाद को बचा लिया तथा होलिका मारी गई।

इसी को याद करने के लिए होली से पहले वाली शाम को होलिका दहन किया जाता है। अगले दिन सभी लोग रंगों से होली खेलते हैं और ख़ुशियां मनाते हैं। इस दिन लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं और होली की शुभकामनाएं देते हैं। होली के दिन घरों में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। होली की ख़ुशी में सभी लोग आपसी मतभेद और मनमुटाव को भुला देते हैं।

नाम : ख़ुशी अटवाल
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली के कई रंग!

होली एक ऐसा त्योहार है जो पूरे भारत में मनाया जाता है आज हम जानेंगे कि थारू समुदाय के लोग होली कैसे मनाते हैं

शुरुआत होली वाले दिन से 1 महीने पहले रात में गांव के पुरुष इकट्ठा होकर जिनके बच्चे हैं, वे गोबर से बने 7 कंडे और जिनकी सिर्फ शादी हुई हो वह 6 और जिनकी शादी ना हुई हो वह 5 कंडे ले आते हैं। फिर सभी भुयां जाकर कंडे रखकर आते हैं इसे होली रखना कहते हैं और थोड़ी पूजा कर के प्रसाद खाकर घर आ जाते हैं।

फिर अमावस्या के बाद सभी गांव में ढोल बजाकर और नाचकर घर-घर होली खेलते हैं। होली वाला दिन आने तक गांव के हर घर में होली खेल लेते हैं सिर्फ प्रधान के घर छोड़कर।

होली वाले दिन की एक रात पहले भुईयां में रखे हुए कंडे जला देते हैं और फिर होली वाले दिन की सुबह सूरज निकलने से पहले खपड़ों में मिट्टी के कुछ चीजें बनाकर और भुईयां में जले हुए कंडे को लेकर गांव के बाहर पूर्ण कर आते हैं। फिर वापस आकर प्रधान के घर में होली खेली जाती है और फिर रात में भी। इन सभी के साथ बहुत से पकवान भी बनाए जाते हैं जैसे कि आलू की चिप्स,कचौड़ियां, गुझिया आदि।

नाम : पीयूष राना
उम्र : 13, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

मिलन का त्योहार

होली एक एसा त्योहार है जिसमें सभी लोग आपस में रंग से खेलते है। होली एक मिलन का त्योहार भी है। इस दिन कई लोग अपने घरों को लौटते हैं। परिवार के साथ खास तौर पर होली खेलने आते हैं। होली मे लोग एक-दूसरे के घर जाकर रंग लगाकर बड़ों से आशिर्वाद लेते हैं।

हमारे स्कूल मे भी होली मनाई जाती है। स्कूल मे जब होली खेलते हैं, तब बच्चों के साथ साथ टीचर भी बच्चे बन जाते हैं और बड़े मजे करते हैं।

नाम : अक्षत कांडपाल
उम्र : 11, कक्षा : 5,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

सब बांध लो अपनी झोली, क्योंकि आने वाली है होली।

बस आ गया रंगों का त्योहार जिसका नाम है होली। इस बार कर दी सबकी झोली गीली।

होली लगभग पूरे देश में मनाई जाती है। इसके मनाने के पीछे पौराणिक कथाएं भी हैं। पर हम तो कथाएं सुनते नहीं, क्योंकि सुनते-सुनते हो जाता है बुरा हाल। अरे भाइ, हम क्यों सुने? हमें तो करने हैं लोगों के गाल लाल।

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण भारतीय त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

होली में सबसे ज्यादा मजा लोगों के घर गुझिया खाने में आता है। और कोई-कोई लोग को गुजिया नहीं खाते, उन्हें कुछ पिलाया जाता है।

आऊंगा आप सब की गली चाहे थोड़ी देर क्यों न हो जाए, लगाऊंगा सबके गालो में गुलाल चाहे जेल क्यों न हो जाए। तो आप सभी को मेरी तरफ से होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

होली मनाओ, रंग लगाओ, चाहे पानी से भिगाओ। एक बात और, शांति व प्यार से मनाओ।

नाम :जतिन सिंह पल्याल
उम्र : 13, कक्षा :8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली मनाने के अलग-अलग तरीके

रंगों का त्योहार होली, भारत के प्रमुख त्यौहार में से एक है। होली को हिंदू धर्म का त्योहार माना जाता है, जिसे बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन होलिका माता प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठी। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई पर प्रह्लाद बच गया।

ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है और इसे लोग मनाने के लिए पहले से ही खुशियां मनाने लगते हैं।

होली मनाने कई अलग-अलग तरीके हैं। जैसे कुमाऊंनी क्षेत्र में गांव में अलग तरीके से होली मनाई जाती है। इस दिन लोग एक जगह मिलाकर गाना गाते हैं। साथ ही ढोल दमाऊ और हुड़के की धुनों पर नाचते हैं और वह गाना कुमाऊंनी भाषा में गाया जाता है। जो लोग गाने गाते हैं, उन्हें होल्यार भी कहते हैं। कुमाऊंनी के बारे में मुझे और तो पता नहीं है। जितना मैंने सुना है, वह मैंने लिखा है। जैसा कि मैं एक थारू समाज की लड़की हूं, तो मैं अपने समाज की होली के बारे में बताना चाहती हूं। थारू समाज में होली मे पुरुष और महिला भी घर-घर जाकर होली के गीत गाती हैं, साथ में नाचती हैं। थारू समाज ढोल-नगाड़े के साथ होली गाना गाते हैं यह होली होलिका दहन तक मनाई जाती है और होली का जो दूसरा हिस्सा होता है, उसे हम लोग मरी होली के नाम से जानते हैं जो होलिका दहन के बाद मनाई जाती है। थारू होली को खड़ी होली भी बोला जाता है।

नाम :निशा राणा
उम्र : 14, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

रंगों से भरा वो दिन

नाम : पवनदीप सिंह
उम्र : 15, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

रंगों से भरा वो दिन होली का। हर तरफ रंग ही रंग। कहीं पीला, तो कहीं लाल। बाज़ार में तो हर जगह रंगो की दुकानें, हर तरफ रंग ही रंग और बच्चो के खेलने के लिए पिचकारियां। हर जगह भीड़ ही भीड़। एक ही आवाज, "अरे लाल रंग लाओ और लाल के साथ पीला भी लेते आना।"

घरों में खाने के लिए गुझिया और ढेर सारी मिठाइयां, होली खेलने के लिए रंग तो होते ही हैं। मेरे घर में भी होता है । और तो और, मेरे घर में मेरी मम्मी गुझिया, चिप्स, पापड़ के साथ और भी बहुत कुछ बनाती हैं।

आपके घरों में भी कुछ न कुछ तो बनता ही होगा। और हमारे घर में बहुत से लोग हमे रंग लगाने आते हैं और साथ में कुछ खाने को भी लाते हैं। और मैं तो अपने दोस्तों के साथ खूब होली खेलता हूं । मुझे तो बहुत मजा आता है होली के दिन। और भी सभी को मजा आता होगा, मेरे घर में तो यह सब चीज़ें होती है, जिसमें मुझे खूब मजा आता है।

होली की तैयारी

होली एक ऐसा त्योहार है जिसका नाम सुनकर सभी के चेहरे में एक अलग ही मुसकराहट आ जाती है इस त्योहार की तैयारियां पांच-छह दिन पहले से ही होने लगती है। इस त्योहार को मनाने के तरीके भी बहुत सुनहरे होते हैं। कहीं पहाड़ी होली, तो कहीं थारू होली से मनोरंजन होता है। घर में पहले से ही कई सारे स्वादिष्ट पकवान भी बनाए जाते हैं। यह बात तो होली से तीन-चार दिन पहले की थी, किंतु जब होली में एक-दो दिन हो, तो हर जगह रंगों की बौछार होने लगती है। सभी के चेहरे से खुशी छलकने लगती है। कहीं बच्चे गुब्बारे एक-दूसरे को मारकर हैं, तो कई लोग रंग लगाकर। और हद तो तब हो जाती है, जब कई लोग एक-दूसरे के ऊपर अंडे और टमाटर जैसी चीजें मारकर खुश होते हैं।

अब होली से 1 दिन पहले रात की बात कर लेते हैं। होली से 1 दिन पहले की रात को लोग सारी तैयारियां करके बैठे रहते हैं। और हद तो तब हो जाती है जब बच्चे पूरी प्लानिंग करके बैठे रहते हैं, जैसे किसी जंग में जाने वाले हो और एक्साइटमेंट की वजह से तो कुछ बच्चे और बड़े सो भी नहीं पाते और जैसे-जैसे सो करके सुबह जल्दी उठकर प्लानिंग करने लगते हैं। फिर कुछ लोग छत पर खड़े होते हैं और कोई आ रहा हो तो कोई उसे चुपके से जाकर रंग देता है। कुछ देर तक जब बच्चे होली खेल लेते हैं, तब एंट्री होती है हमारे बड़ों की। जब वे होली खेलते हैं, तो ऐसा लगता है कि जंग लड़ रहे हो और उस दिन उनकी शक्ल देखकर लगता है कि साक्षात भूत सामने आ गया हो। फिर होली खेल लेने के बाद रंग-बिरंगा मोहल्ला देख कर मजा ही आ जाता है।

फिर अपनी रंग-बिरंगी शक्ल

देखने के बाद हम उसे गोरा करने नहाने चले जाते हैं।

फिर अगले दिन इस गम में बैठे रहते हैं कि हमने होली के मजे क्यों नहीं लिए और सोचते हैं कि होली खत्म क्यों हो गई ?

नाम : योगेश जोशी
उम्र : 14, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

शहर एक अनुभव का नाम है

शहर के अनुभव से हर किसी को गुज़रना ही पड़ता है। चाहे वह रोज़गार के लिए हो, या किसी इंस्टीट्यूट में पढ़ने के लिए। इस बार मैं भी इस अनुभव का हिस्सा रही। मैंने भी शहर नामक इंस्टीट्यूट को देखा और जाना। नानकमत्ता पब्लिक स्कूल के हम लगभग 44 शिक्षार्थी, दिल्ली की एक ट्रिप का हिस्सा रहे। हम सभी न सिर्फ़ घूमने गए बल्कि हमारा मक़सद विश्व पुस्तक मेले को एक्सप्लोर करना था। हमने अनेक मॉन्यूमेंट्स को देखा और उन्हें इतिहास से जोड़ने का प्रयास किया। नेशनल म्यूज़ियम भी हमारे इस सफ़र का हिस्सा था जहां हमने प्राचीन अवशेषों को देखकर समझने की कोशिश की।

बबीता जोशी
कक्षा-11

हर इंसान की प्रवृत्ति होती है कि न तो वह अकेला रहना चाहता है, न ही रह पाता है। सभी धीरे-धीरे इतने सारे सोशल ग्रुप्स बनाना शुरू कर देते हैं कि शायद उन्हें भी इसका कोई अंदाज़ा नहीं होता। शहरों की ओर बढ़ा जाए जहां टेक्नोलॉजी के आने से लोग ट्रांसपोर्ट को कम समय देने लगे हैं, और लैपटॉप में बैठकर काम करने लगे हैं। यहां लोग आधुनिकता की ओर तेज़ी से आकर्षित होते जा रहे हैं। अगर महिलाओं या लड़कियों की स्थिति के बारे में बात की जाए, तो वह इतने बड़े शहर में इतनी ज्यादा असुरक्षित हैं कि घर से बाहर ही नहीं निकलतीं। निकलने पर वह मेट्रो से सफ़र करना पसंद करतीं हैं, जहां उनकी सुरक्षा बनी रहे।

हमारे शहरों, इमारतों, पार्कों, बाज़ारों या घूमने-फिरने की जगहों को पुरुषों ने डिज़ाइन किया है। इसलिए अधिकांश जगह महिलाओं के लिए सुविधाजनक, सुरक्षित और फिट नहीं बैठती। कहीं बिजली नहीं होती, तो कहीं बैठने की जगह नहीं होती। सार्वजनिक जगहों पर बच्चों को दूध पिलाने या उनके कपड़े बदलने के लिए भी कोई अलग सुविधा उपलब्ध नहीं होती। इस तरह की दिक्कतें जब हमने दिल्ली जैसे महानगर में महसूस की, मुझे लगा कि अगर इतने बड़े शहर में हमारे लिए कोई आम सुविधाएं ही नहीं हैं, तो हम छोटे शहरों या कस्बों से क्या उम्मीद करेंगे!

दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में घूमते हुए मुझे वॉशरूम की ज़रूरत पड़ी, लेकिन कहीं भी कोई सार्वजनिक वॉशरूम नहीं था। थोड़ा

प्रयास करने पर भी मुझे उस इलाके में वॉशरूम नहीं मिला। दिल्ली के इस अनुभव ने मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि अगर किसी एक लड़की को दिल्ली में ट्रैवलिंग के दौरान सैनिटरी पैड चेंज करना हो, तो उसे आसपास कोई सुविधा मुश्किल से ही उपलब्ध होगी। उसे बहुत दूर चलकर पालिका बाज़ार जाना पड़ सकता है जहां वह चेंज कर सके। जब लड़कियों के शरीर में इतने सारे क्रैम्प्स आते हैं, उनकी हालत चलने लायक नहीं होती, ऐसी स्थिति में उन्हें इतना दूर चलना पड़े, तो यह महिलाओं के अधिकारों को नज़रअंदाज़ करने जैसा ही है।

आज भी जब पब्लिक स्पेसेस पर महिलाओं की बात होती है तो महिलाओं, ट्रांस या क्वीर समुदायों की मौजूदगी नज़र नहीं आती। ट्रांस कम्यूनिटी को लोग सामान्य लोगों जितना सम्मान नहीं देते। साथ ही अलग-अलग नामों से बुलाते हैं, जैसे - किन्नर, हिजड़े और भी बहुत कुछ। यह ऐसी कम्यूनिटी है, जो लड़कियों या महिलाओं को बहुत सम्मान देती है। उनका कहना है, "औरतों के कारण ही तो हमारा काम चलता है अगर वह इस समाज में ही नहीं रहीं, तो समाज कैसे चलेगा"। यह लोग लड़कियों को भी लड़कों के समान अधिकार देने की बात करते हैं। कहीं भी दुआएं देने जाने पर वह समानता की बात रखते हैं।

हमारा विद्यालय सिनेमा को सीखने-सिखाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम मानता है। हर रोज़ बच्चों को उनके पाठ्यक्रम से संबंधित कोई न कोई फिल्म दिखाई जाती है और उसपर चर्चा भी की जाती है। इस दौरान हमने 'मेरा अपना शहर' डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखी। इसे देखकर यह महसूस हुआ कि शहरों में महिलाओं की क्या स्थिति है, क्योंकि यह फ़िल्म एक महिला के नज़रिए पर थी इसलिए इसे समझना मेरे लिए ज्यादा मुश्किल नहीं था। आज जब हम बात करते हैं कि महिलाओं की स्थिति में सुधार आया है तो कई बार मेरा विश्वास करने का मन नहीं करता।

हाल ही में मैंने 'नो नेशन फॉर वूमेन' किताब पढ़ी। इसे पढ़कर मुझे यह समझ आया कि महिलाओं के लिए इस समाज में कितनी जगह है। यह किताब महिलाओं के साथ हुए गलत कर्मों पर बात करती है। मुझे यह भी समझ आया कि जो लोग महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम देखते हैं, इसमें उनका क्या दोष है। जिनकी परवरिश हुई ही एक ऐसे समाज में है जहां लड़कियों या महिलाओं को एक निर्धारित प्रतिष्ठा और दर्जा मिलना आम बात है, उनसे हम बराबरी और न्याय की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 9810556533
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**